हिंदी भाषा का क्रमिक विकास

हिंदी भाषा का क्रमिक विकास

- हिन्दी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना माना गया है। संस्कृत भारत की सबसे प्राचीन भाषा है जिसे आर्य भाषा या देव भाषा भी कहा जाता है।
- हिन्दी इसी आर्य भाषा संस्कृत की उत्तराधिकारिणी मानी जाती है । 'हिन्दी' वस्तुत: फारसी भाषा का शब्द है,जिसका अर्थ है - हिन्दी का या हिंद से सम्बन्धित (शब्द हिंदी नहीं शब्द हिंद फारसी का है) हिन्दी शब्द की निष्पत्ति सिन्धु -सिंध से हुई है क्योंकि ईरानी भाषा में 'स' को 'ह' बोला जाता है। इस प्रकार हिन्दी शब्द वास्तव में सिन्धु शब्द का प्रतिरूप है। कालांतर में हिंद शब्द सम्पूर्ण भारत का पर्याय बनकर उभरा । इसी 'हिंद' से हिन्दी शब्द बना।

- हिन्दी भारोपीय परिवार की आधुनिक काल की प्रमुख भाषाओं में से एक है। भारतीय आर्य भाषाओं का विकास क्रम इस प्रकार है:- संस्कृत >> पालि >> प्राकृत >> अपभ्रंश >> हिन्दी व अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ !
- हिंदी का जन्म संस्कृत की ही कोख से हुआ है। जिसके साढ़े तीन हजार से अधिक वर्षों के इतिहास को निम्नलिखित तीन भागों में विभाजित करके हिंदी की उत्पत्ति का विकास क्रम निर्धारित किया जा सकता है:-
- 1. प्राचीन भारतीय आर्यभाषा - काल (1500 ई0 पू0 - 500 ई0 पू0)
- 2. मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा - काल (500 ई0पू0 - 1000 ई0)
- 3. आधुनिक भारतीय आर्यभाषा - काल (1000 ई0 से अब तक)

- प्राचीन भारतीय आर्यभाषा - काल : 1500 - 500 ई0 पू0 : वैदिक एवं लौकिक संस्कृत
- इस काल में वेदों, ब्राह्मणग्रंथों, उपनिषदों के अलावा वाल्मीकि, व्यास, अश्वघोष, भाष, कालिदास तथा माघ आदि की संस्कृत रचनओं का सृजन हुआ।
- एक हजार वर्षों के इस कालखण्ड को संस्कृत भाषा के स्वरूप व्याकरणिक नियमों में अंतर के आधार पर निम्नलिखित दो भागों में विभाजित किया जाता है
- 1. वैदिक संस्कृत : (1500 ई0 पू0 - 1000 ई0 पू0)
- मूल रूप से वेदों की रचना जिस भाषा में हुई उसे वैदिक संस्कृत कहा जाता है। प्राचीनतम रूप संसार की (अब तक ज्ञात) प्रथम कृति ऋग्वेद में प्राप्त होता है। ब्राह्मण ग्रंथ और उपनिषदों की रचना भी वैदिक संस्कृत में हुई, हालांकि इनकी भाषा में पर्याप्त अंतर पाया जाता है। संसार का सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद है। ऋग्वेद से पहले भी सम्भव है कोई भाषा विद्यमान रही हो परन्तु आज तक उसका कोई लिखित रूप नहीं प्राप्त हो पाया। इससे यह अनुमान होता है कि सम्भवतः आर्यों की सबसे प्राचीन भाषा ऋग्वेद की ही भाषा, वैदिक संस्कृत ही थी।

- 2. लौकिक संस्कृत : (1000 ई0 पू0 - 500 ई0 पू0)
- दर्शन ग्रंथों अतिरिक्त संस्कृत का उपयोग साहित्य में भी हुआ। इसे लौकिक संस्कृत कहते हैं। वाल्मीकि, व्यास, अशवघोष, भाष, कालिदास, माघ आदि की रचनाएं इसी में है।
- वेदों के अध्ययन से स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि कालान्तर में वैदिक संस्कृत के स्वरूप में भी बदलाव आता चला गया।
- कात्यायन ने संस्कृत भाषा के बिगड़ते स्वरूप का संस्कार किया और इसे व्याकरणबद्ध किया। पाणिनि के नियमीकरण के बाद की संस्कृत, वैदिक संस्कृत से काफ़ी भिन्न है जिसे लौकिक या क्लासिकल संस्कृत कहा गया।
- रामायण, महाभारत, नाटक, व्याकरण आदि ग्रंथ लौकिक संस्कृत में ही लिखे गए हैं।
- हिन्दी संस्कृत ही है।

- संस्कृत काल के अंतिम पड़ाव तक आते- आते मानक अथवा परिनिष्ठित भाषा तो एक ही रही, किन्तु क्षेत्रीय स्तर पर तीन क्षेत्रीय बोलियाँ यथा- (i)पश्चिमोत्तरीय (ii)मध्यदेशीय और (iii)पूर्वी विकसित हो गईं।
- मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा - काल : 500 ई0पू0 - 1000 ई0 : पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश
- मूलतः इस काल में लोक भाषा का विकास हुआ। इस समय भाषा का जो रूप सामने आया उसे 'प्राकृत' कहा गया।
- वैदिक और लौकिक सं काल में बोलचाल की जो भाषा दबी पड़ी हुई थी, उसने अनुकूल समय पाकर सिर उठाया और जिसका प्राकृतिक विकास 'प्राकृत' के रूप में हुआ। वैयाकरणों ने प्राकृत भाषाओं की प्रकृति संस्कृत को मानकर उससे प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति की है। "प्रकृतिः संस्कृतं, तत्रभवं तत आगतं वा प्राकृतम्"।
  मध्यकाल में यही प्राकृत निम्नलिखित तीन अवस्थाओं में विकसित हुईः-

- 1. पालि : (500 ई0 पू0 - 1 ईसवी)
  संस्कृत कालीन बोलचाल की भाषा विकसित होते- होते या कहें कि सरल होते- होते 500 ई0 पू0 के बाद काफी बदल गई, जिसे पालि नाम दिया गया। पुरानी प्राकृत और भारत की प्रथम देश भाषा कहा जाता है। 'मगध' प्रांत में उत्पन्न होने के कारण श्रीलंका के लोग इसे 'मागधी' भी कहते हैं। की 'पालि भाषा' में बोलचाल की भाषा का शिष्ट और मानक रूप प्राप्त होता है। आते- आते क्षेत्रीय बोलियों की संख्या तीन से बढ़कर चार हो गई। (i) पश्चिमोत्तरीय
  (ii) मध्यदेशीय (iii) पूर्वी और (iv) दक्षिणी ।

- 2. प्राकृत : (1 ई0 - 500 ई0) तक आते-आते यह बोलचाल की भाषा और परिवर्तित हुई तथा इसको प्राकृत की संज्ञा दी गई।
  सामान्य मतानुसार जो भाषा असंस्कृत थी और बोलचाल की आम भाषा थी तथा सहज ही बोली समझी जाती थी, स्वभावतः प्राकृत कहलायी। क्षेत्रीय बोलियों की संख्या कई थी, जिनमें शौरसेनी, पैशाची, ब्राचड़, महाराष्ट्री, मागधी और अर्धमागधी आदि प्रमुख हैं।
- भाषा विज्ञानियों ने प्राकृतों के पाँच प्रमुख भेद स्वीकार किए हैं -

- 1. शौरसेनी
  (सूरसेन- मथुरा के आस-पास मध्य देश की भाषा जिस पर संस्कृत का प्रभाव)
  2. पैशाची (सिन्ध)
  3. महाराष्ट्री (विदर्भ महाराष्ट्र)
  4. मागधी (मगध)
  5. अर्द्धमागधी (कोशल प्रदेश की भाषा, जैन साहित्य में प्रयुक्त)
  3. अपभ्रंश : (500 ई0 से 1000 ई0)
- भाषावैिक दृष्टि से अपभ्रंश भारतीय आर्यभाषा के मध्यकाल की अंतिम अवस्था है जो प्राकृत और आधुनिक भाषाओं के बीच की स्थिति है।
- कुछ दिनों बाद प्राकृत में भी परिवर्तन हो गया और लिखित प्राकृत का विकास रुक गया, परंतु कथित प्राकृत विकसित अर्थात परिवर्तित होती गई। लिखित प्राकृत के आचार्यों ने इसी विकासपूर्ण भाषा का उल्लेख अपभ्रंश नाम से किया है। इन आचार्यों के अनुसार 'अपभ्रंश' शब्द का अर्थ बिगड़ी हुई भाषा था।

- अपभ्रंश के निम्नलिखित सात भेद स्वीकार किए हैं, जिनसे आधुनिक भारतीय भाषाओं/उप भाषाओं का जन्म हुआ -
  1. शौरसेनी :
  पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी और गुजराती
  2. पैशाची : लंहदा , पंजाबी
  3. ब्राचड़ : सिन्धी
  4. खस : पहाड़ी
  5. महाराष्ट्री : मराठी
  6. मागधी :
  बिहारी, बांग्ला, उड़िया व असमिया
  7. अर्ध मागधी :
  पूर्वी हिन्दी
  अतः कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषा का विकास अपभ्रंश के शौरसेनी, मागधी और अर्धमागधी रूपों से हुआ है।
- आधुनिक भारतीय आर्यभाषा - काल : 1000 ई0 से अब तक : हिंदी एवं अन्य आधुनिक आर्यभाषाएँ
- 1100 ई0 तक आते-आते मध्य आर्यभाषा काल समाप्त हो गया और आधुनिक भारतीय भाषाओं का युग आरम्भ हुआ।

- अपभ्रंश के विभिन्न क्षेत्रीय स्वरूपों से आधुनिक भारतीय भाषाओं/ उप-भाषाओं यथा पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, लंहदा, पंजाबी, सिन्धी, पहाड़ी, मराठी बिहारी, बांग्ला, उड़िया, असमिया और पूर्वी हिन्दी आदि का जन्म हुआ है। आगे चलकर पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी, पूर्वी हिन्दी और पहाड़ी पाँच उप-भाषाओं तथा इनसे विकसित कई क्षेत्रिय बोलियों जैसे ब्रजभाषा, खड़ी बोली, जयपुरी, भोजपुरी, अवधी व गढ़वाली आदि को समग्र रूप से हिंदी कहा जाता है।
- कालांतर अधिक विकसित होकर अपने मानक और परिनिष्ठित रूप में वर्तमान और बहुप्रचलित मानक हिंदी भाषा के रूप में सामने आई ।
- मध्यकालीन हिन्दी
- मध्ययुगीन हिंदी में भक्ति आन्दोलन में हिन्दी खूब फली फूली। पूरे देश के भक्त कवियों ने अपनी वाणी को जन-जन तक पहुंचाने के लिये हिन्दी का सहारा लिया।
- आधुनिक काल

- स्वतन्त्रता संग्राम के समय हिन्दी
  भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में हिन्दी और हिन्दी पत्रकारिता की महती भूमिका रही।
  महात्मा गांधी सहित अनेक राष्ट्रीय नेता हिन्दी हो राष्ट्रभाषा के रूप में देखने लगे थे।
  स्वतंत्रता के बाद की हिन्दी
  भारत के स्वतन्त्र होने पर हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया।
- इंटरनेट युग में हिन्दी
- हिंदी भाषा की जितनी मांग है, इंटरनेट पर उतनी उपलब्धता नहीं है। लेकिन जिस रफ़्तार से भारत में इंटरनेट का विकास हुआ है उसी तरह से हिंदी भी इंटरनेट पे छा रही है।

- समाचारपत्र से लेकर हिंदी ब्लॉग तक अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है। साधुवाद तो गूगल को भी जाता है जिसने हिंदी में खोज करने की जगह उपलब्ध कराई। इतना ही नहीं विकिपीडिया ने भी हिंदी की महत्ता को समझते हुए कई सारी सामग्री का सॉफ्टवेयर अनुवाद हिंदी में प्रदान करना सुरु कर दिया जिससे हिंदी भाषी को किसी भी विषय की जानकरी सुलभ हुई।आजकल हिंदी भी इंटरनेट की एक अहम् लोकप्रिय भाषा बन कर उभरी है। मेरा मानना है जब लोग अपने विचार और लेखन हिंदी भाषा में इंटरनेट पर ज्यादा करेंगे तो वह दिन दूर नहीं की सारी सामग्री हिंदी में भी इंटरनेट पर मिलने लगेगी।
- * **यह** विषय सामग्री इंटरनेट व हिंदी इतिहास की पुस्तकों से ली गयी है में इसके पूर्ण सत्य होने का दावा नही करता हूँ ।

धन्यवाद